धर्म में रूढ़िवाद

मूल उर्दू लेखन
हज़रत मौलाना सदरुद्दीन

हिन्दी अनुवाद
डॉ. खुर्शीद आलम तारीन

2001 AD

प्रकाशक
अहमदिय्या अंजुमन इशात-ए-इस्लाम (लाहौर) हिन्द
मस्जिदे अहमदिय्या क़लमदान पुरा,
श्रीनगर,कश्मीर. पिन. 190002

www.aaiil.org

अहमदिय्या सम्प्रदाय के संस्थापक
हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिबरअ की घोषणा

"वह व्यक्ति *लानती* है जो हज़रत पैग़म्बरश्री (मुहम्मद)सल्ल के सिवा, उन के बाद , किसी और को *नबी* विश्वास करता है ,और उन की *ख़तमे नबूवत* को तौड़ता है।"

(अख़बार *'अल–हकम'* ,क़ादियान ,10जून 1905 ई. ,पृ. 2)

© कॉपीराइट सर्वाधिकार 2001

अहमदिय्या अंजुमन इशाते इस्लाम (लाहौर) हिन्द
क़लमदान पुरा ,श्रीनगर ,कश्मीर — 19002

अहमदिय्या अंजुमन इशाअते इस्लाम — इस अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामी प्रचार केन्द्र की स्थापना 1914 ई. में लाहौर में हुई। इस महा प्रचार केन्द्र के नींवदाता हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिबअस के वरिष्ठ शिष्य थे। इस प्रचार केन्द्र का एकमात्र उद्देश्य इस्लाम की वह उदार, सहिष्णु और शांतिप्रिय छवि पुनः दुनिया के सामने रखना है ,जिस का सहज चित्रण कुर्आन शरीफ़ और हज़रत पैग़म्बरश्री मुहम्मदसल्ल के परमशुभ चरित्र में विद्यमान है। इस संस्था ने अब तक संसार की अनेक प्रमुख भाषाओं में इस्लाम पर अति विपुल साहित्य प्रकाशित किया है ,जो सर्वत्र अपार श्लाघा और ख्याति प्राप्त कर चुाका है।

प्रथम हिन्दी संस्करण : 2001 ई.

हज़रत मौलाना स़दरुद्दीन
(संक्षिप्त परिचय)

१८८१ ई॰ में सियाल कोट में जन्म लिया। मौलवी फ़ाज़िल, बी॰ए॰, एस॰ए॰वी॰ और बी॰टी॰ की डिगरियाँ प्राप्त करने के उपरांत पहले इन्स्पेक्टर आफ स्कूलज़ फिर टीचरस कॉलेज में अंग्रेज़ी के परोफेसर बने। १९०५ ई॰ में चौदवीं सदी हिज्री के " **मुजदिद्द** " (युग—सुधारक) तथा अहमदिय्या आंदोलन के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब (अल्लाह उन से राज़ी हो !) के करकमलों पर " बैयत " की अर्थात् दीक्षा प्राप्त की। हज़रत मिर्ज़ा साहिब के **खलीफ़ा** (उत्तराधिकारी) हज़रत मौलना नूररुद्दीन (अल्लाह उन पर अपनी दयालुता वर्षित करे !) और अहमदिय्या समिति के निवेदन पर १९०६ से १९१४ ई॰ तक क़ादियान के **तालीम अल्—इस्लाम हाई स्कूल** के प्रिंसिपल रहे। जब १९१४ में **अहमदिय्या जमाअत** में सिद्धांतों के आधार पर मतभेद हुआ तो आप भी हज़रत मौलाना मुहम्मद अली लाहौरी के साथ क़ादियान को छोड़ लाहौर चले आये और विश्वविख्यात इस्लामी प्रचार केन्द्र " **अहमदिय्या अंजुमन इशाते इस्लाम लाहौर** " के नींवदाताओं में शामिल हो गए। १९१४ से १९१६ ई॰ तक लन्दन में बतौर मुस्लिम मिशनरी और इमाम कार्य किया। १९१९ ई॰ में पुनः लन्दन गए। १९२२ ई॰ में जर्मनी गए और **बरलिन मुस्लिम मिशन** की स्थापना की और १९२५ ई॰ में बरलिन की प्रथम मस्जिद का निर्माण किया। इस मस्जिद को जर्मनी के ऐतिहासिक समारकों में शामिल कर लिया गया है। १९४० ई॰ में क़ुर्आन शरीफ़ की जर्मन भाषा में टीका प्रकाशित की। यह टीका आज भी धार्मिक एवं साहित्यिक दृष्टि से जर्मन भाषा की प्रमाणिकतम टीका मानी जाती है। जब १९५१ ई॰ में हज़रत मौलाना मुहम्मद अली (अल्लाह उन से राज़ी हो !) का देहांत हुआ तो आप को अहमदिय्या अंजुमन इशाते इस्लाम लाहौर का **द्वितीय अमीर** (अध्यक्ष) चुना गया। आप १५ नवम्बर १९८१ ई॰ तक इसी पद पर बिराजमान रहे। आप के हाथ पर सेंकड़ों ग़ैरमुस्लिमों ने इस्लाम क़बूल किया, जिन में जर्मनी के सुप्रसिद्ध दार्शनिक डा॰ मारकूस और ऑसट्रेलिया के मुहम्मद असद (जिन्हों ने क़ुर्आन शरीफ़ की टीका अंग्रेज़ी भाषा में लिखी है) उल्लेखनीय हैं। हज़रत मौलाना स़दरुद्दीन ने उच्च कोटि की अनेक धर्म—पुस्तकें भी रचीं जो हिन्द व पाक के जाने माने विद्वानों से श्लाघा प्राप्त कर चुकी हैं। कुछ नाम यह हैं : **ज़रूरते हदीस, मआरिफ अल्—क़ुर्आन, खसाइस अल्—क़ुर्आन, मुहम्मद मुस्तफ़ा ज़माना हाल के पैग़म्मबर , ग़रीबों के वाली, कामयाब ज़िन्दगी के तसौवर, क़ुर्आन करीम की बयान करदा साइन्स** आदि। इन सभी पुस्तकों का अंग्रेज़ी अनुवाद हो चुका है। प्रस्तुत पुस्तक उन की मशहूर लघु उर्दू कृति **"मुहम्मद मुस्तफ़ा : ज़माना हाल के पैग़म्मबर , अक़वामे आलम के पैग़म्बर"** का हिन्दी रूपांतर है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔

अल्लाह के नाम से , जो अपार दयालु , सतत् कृपालु है।

धर्म में रूढ़िवाद

(यह लेख हज़रत मौलाना सदरुद्दीन के ७ दसंबर १९६२ के *'ख़ुत्बा-ए-जुमा'* पर आधारित है)

ليس البرّ ان تولوا وجوهكم قبل المشرق و المغرب و لٰكنّ البرّ من
اٰمن بالله واليوم الاٰخر و الملٰئكة و الكتٰب و النّبيّين و اٰتى المال على
حبّه ذوى القربٰى و اليتٰمى و المسٰكين و ابن السّبيل والسّائلين وفى
الرّقاب و اقام الصّلٰوة و اٰتى الزّكٰوة و الموفون بعهدهم اذا عٰهدوا والصّٰبرين فى
البأسآء و الضّرّآء و حين البأس اولٰئك الّذين صدقوا
و اولٰئك هم المتّقون . (١٧٧:٢).

लैसल्–बिर्र अन् तुवल्लू वुजूहकुम् क़िबलल–मश्रिक़ि वल्–मग़्रिबि व लाकिन्नल्–बिर्र मन् आमन बिल्लाहि वल्–यौमिल्–आख़िरि वल्–मलाअिकति वल्–किताबि व–न्नबिय्–यीन व आतल्–माल अला हुब्बिही ज़विल्–क़ुर्बा वल्–यतामा वल्–मसाकीन वब्नस्–सबीलि वस्–साअिलीन व फ़िर्रिक़ाबि व अक़ामस्–सलात व आतज़्–ज़कात वल्–मूफ़ून बिअहदि–हिम इज़ा आहदू वस्–साबिरीन फ़ल्–बासाअि वल्–ज़र्रआअि व हीनल्–बासि ऊलाअिकल्–लज़ीन सदक़ू व ऊलाअिक हुमुल्–मुत्तक़ून

"धर्मपरायणता यह नहीं कि तुम अपने मुँह पूरब अथवा पश्चिम की ओर फेर लो , परन्तु धर्मपरायण यह है कि अल्लाह पर, और अन्तिम दिन पर, और फ़रिश्तों पर, और नबियों पर ईमान लाए । और उस (परम प्रभु) के प्रेम हेतु निकट संबंधियों और अनाथों और ज़रूरतमन्दों और मुसाफ़िरों और माँगने वालों पर और दासों (की आज़ादी) पर धन व्यय करे; और नामज़ क़ायम करे और ज़कात दे । और वचन को पूरा

करने वाले— जब वे वचन दें ; और तंगी , और संकट , और मुकाबले के वक़्त धैर्य दिखाने वाले — यही वे लोग हैं जिन्हों ने अपनी बात सच कर दिखाई , और यही कर्तव्यनिष्ठ हैं ।" (कुर्आन शरीफ़ 2 : 177)

इस्लाम रूढ़ियों का धर्म नही

अल्लाह ने इस आयत में यह आदेश दिया है कि तुम सब सत्यप्रिय यानि यथार्थवादी बन जाओ । कारण , इस्लाम रीति-रिवाजों , रूढ़ियों और परंपराओं का धर्म नहीं । अल्लाह के (अन्तिम) रसूल हज़रत मुहम्मद[सल्ल 1] ने सभी तथाकथित कर्मकांड रूपी प्रथाओं को पूर्णतया समाप्त कर दिया। आप ने संसार के सामने एक ऐसा स्वाभाविक एवं सरल धर्म प्रस्तुत किया जिस को हर इन्सान बड़ी आसानी से व्यहार में ला सकता है । अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद[सल्ल] ने धर्म को पंडित , पुरोहित , पादरी और मौलवी से छीन लिया , और फिर उसे जनसाधारण के हवाले कर दिया । इस्लाम की हर बात का सीधा संबंध जनसाधारण से है । जो बातें आम जनता की समझ में आ सकें उन्हीं को धर्म की संज्ञा दी गई है। हज़रत पैग़म्बर-श्री[सल्ल] ने धर्म को सर्वप्रकार के अंधविश्वासों और हठधर्मिताओं से एकदम साफ व शोधित कर किया ।

ईसाइयों की विडंबना

हज़रत ईसा[अ.स.2] हमारे भी पैग़म्बर हैं , हम उनका दिल व

---

1. आदरसूचक वाक्य *'सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम्'* (अर्थात् उन पर अल्लाह की अपार कृपा और शांति वर्षित हो !) का संक्षिप्त रूप । जहाँ भी हज़रत पैग़म्बर-श्री मुहम्मद का शुभ नाम आए पूरा वाक्य पढ़ा जाए । (अनुवादक)

2. आदरसूचक वाक्य *'अलैहि-स्सलाम'* (यानि उन पर अल्लाह की अपार शांति वर्षित हो !) का संक्षिप्त रूप । (अनुवादक)

जान से आदर-सत्कार करते हैं । परन्तु उन के अनुयायिओं ने कह दिया कि *'शरियत'* (धर्मविधान) एक अभिशाप है , और यह भी कहा कि हज़रत ईसा[अ.स.] ने समस्त मनुष्यों के पापों को अपने सिर लेलिया , और सूली पर प्राणत्याग कर उनके पापों की क्षतिपूर्ति (ATONEMENT) कर दी । फल यह कि अब मनुष्य को किसी धर्मविधान या नियम की ज़रूरत नहीं । परन्तु आज भी जहाँ कहीं इन धर्मविधान-विमुखों के यहाँ बच्चा पैदा होता है , तो जन्म के क्षण से ही धर्मविधान का अनुपालन शुरू हो जाता है । जन्म के उपरांत बच्चे को बपतिस्मा (BAPTISM) देना ज़रूरी है , और यदि कोई बच्चा बपतिस्मा लेने से पहले ही मर जाए तो ईसाई मान्यतानुसार वह नरक की ऊपरी सतह पर रींगता रहेगा , ऐसे बच्चे को ईसाई कबरिस्तान में दफ़न नहीं किया जा सकता । अगर कोई व्यक्ति ईसाईमत ग्रहण करना चाहे और वह बड़ी उम्र का हो , तो उसे अपने पिछले पापों की क्षमा एवं दोषमुक्ति हेतु एक सूची तैयार कर पादरी साहिब के हवाले करना होगी । इस अपराध-स्वीकरण (CONFESSION) के पश्चात् पादरी साहिब उसको ईसाई धर्म का बपतिस्मा देंगे और उस के अपराध क्षमा कर देंगे। देखिये ! धर्मविधान को अभिशाप कहने वालों को भी किस तरह कदम कदम पर धर्मविधान की पाबंदी करना पड़ती है । इसी तरह कोई व्यक्ति पादरी का पद ग्रहण नहीं कर सकता जब तक गिर्जे में (ORDINATION) नाम के संस्कार का अनुष्ठान न हो , और कोई गिर्जा तब तक गिर्जा नहीं बन सकता जब तक उस में (CONSECRATION) की रसम अदा न की जाए । तात्पर्य यह कि अनेकों संस्कार और कर्मकांड संबंधी कृत्य जारी कर रखे हैं। अपने रहन सहन और पूजा आदि के लिए यूरोप वालों ने विभिन्न नियम बना रखे हैं ; और समझते हैं कि इन नियमों के विधिवत पालन के बिना हमारे अन्दर सभ्यता (CIVILIZATION) का उदय नहीं हो सकता । भोजन के नियम पूर्वनिश्चित हैं , वस्त्र संबंधी नियम भी पहले से मुकर्रर हैं ।

यहूदी धर्म में रस्में

यहूदी धर्मग्रन्थों में कर्मकांड संबंधी पुस्तक अलग से मौजूद

है। इन धार्मिक कृत्यों अथवा रस्मों का अनुष्ठान हज़रत हारून[अ.स.] के वंशजों के अतिरिक्त और कोई नहीं करवा सकता ।

हिन्दू धर्म के संस्कार

इधर हमारा पड़ोसी यानि हिन्दू भाई , बच्चे के जन्म से लेकर मरण तक कोई काम कर ही नहीं सकता जबतक पंडित जी से मुहूर्त आदि न निकलवा ले । सती-प्रथा को ही देख लीजिए यह कितनी निर्मम और हृदयविदारक है , पत्नी को अपने मृत पति के शव के साथ ज़िन्दा जल मरना होता था । सती होने वाली स्त्री को इज़्ज़त की निगाह से देखा जाता था । (सती-प्रथा पर तो कानूनी पाबंदी है , लेकिन) विधवा औरत आज भी हिन्दू समाज में अपमान और घृणा का पात्र बनी हुई है । उसे अच्छे कपड़े पहनने की , चारपाई पर सोने की या बनाव-सिंगार करने की इजाज़त नहीं । उसे खानदान की मन्हूस औरत समझा जाता है , समाज भी उसे अच्छी निगाह से नहीं देखता ।

प्राकृतिक धर्म में प्रथाओं और रूढ़ियों का अभाव

हज़रत पैग़म्बर-श्री[सल्ल.] ने उन सब कुप्रथाओं और रूढ़ियों को 'पथभ्रष्टता' की संज्ञा देकर समाप्त कर दिया जो मानवीय बुद्धि , विवेक और प्रकृति के एकदम प्रतिकूल हैं । आप ने एलान फरमाया : ليس البـّر ان تولوا وجوهكم قبل المشرق و المغرب लैसल्-बिर्र अन् तुवल्लू वुजूहकुम् क़िबलल-मश्रिक़ि वल्-मग़्रिबि, यानि 'मात्र पूरब या पश्चिम की ओर मुँह फेर कर पूजा-अर्चना कर लेना 'धर्म' नहीं और न ऐसा करके तुम प्रभु को प्रसन्न कर सकते हो'। (١١٥:٢) فاينما تو ّلوا فثـّم وجه الله फ़ऐनमा तुवल्लू फ़सुम्म वजहुल्लाह , यानि 'वास्तविक्ता यह है कि मनुष्य जहाँ भी हो , चाहे उसका मुँह किसी भी दिशा में हो , प्रभु का स्मरण कर ले तो प्रभु उसकी प्रार्थना सुन लेते हैं।' हज़रत

पैग़म्बर-श्री[सल्ल॰] ने नमाज़ी को यहाँ तक अनुमति दी है कि वह सफ़र में सवारी की पीठ पर बैठे-बैठे ही नमाज़ पढ़ सकता है, चाहे उसकी सवारी का मुँह किसी भी ओर हो। इसी तरह यदि हम नौका में सवार हों , जो किसी भी दिशा में जा रही हो , वहाँ हम किसी भी दिशा की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ सकते हैं। आप ने यह भी फरमाया कि मात्र निष्प्राण बाह्य कृत्यों के अनुष्ठान से परमात्मा को प्रसन्न नहीं किया जा सकता। भक्त की भक्ति , उपासक की उपासना पूरब या पश्चिम की मोहताज नहीं , और न ही पूरब या पश्चिम की ओर मुहँ फेर लेने में कोई विशेष पुण्य या भलाई है।

नेकी या पुण्य की परिभाषा ?

फ़रमाया : و لٰكنّ البرّ من اٰمن بالله واليوم الاٰخر व लाकिन्नल्–बिर्रि मन् आमन बिल्लाहि वल्–यौमिल्–आख़िरि , यानि 'वास्तविक पण्य-कर्म यह है कि परमात्मा की अपरंपार सत्ता पर ईमान लाया जाए , कर्मफल के सिद्धांत में आस्था रखी जाए , और इस बात में भी विश्वास रखा जाए कि 'क़यामत' का आना अटल है। एक दिन ऐसा ज़रूर आयेगा जब बन्दों से उनके कर्मों का हिसाब लिया जाएगा ।'

और फरमाया : و الملٰئكة و الكتٰب و النبيّين वल्–मलाअिकति वल्–किताबि व–न्नबिय्–यीन , अर्थात् ' नेकी के लिए यह भी अनिवार्य है कि मनुष्य परमात्मा द्वारा रचित 'फ़रिश्तों' में विश्वास धरे , परमात्मा द्वारा उतारे गए दिव्य ग्रन्थों को सत्य जाने , और उसके समस्त पैग़म्बरों-अवतारों[1] का समान रूप से आदर और सम्मान करे।'

---

1. *'अवतार'* शब्द को यों परिभषित किया गया है : " He is necessarily a man with a message."(The Bhagavad Gita, by S. Chidbhvanada, Sri Rama Krishna Mission, P.45). यही अर्थ *'रसूल'* और *'पैग़म्बर'* शब्द का है। एक और हिन्दू विद्वान ने लिखा है : "No man born is a God, whether he is Sri Krishna, Sri Rama or Jesus.They were simply the guiding human spirits of the time and hence, the ignorant man elevates them to godhead." (Remedy the Frauds in Hinduism , by Kuttikhat Purushothama Chon, Bombay, Edition 1991AD, P.34). (अनुबादक)

यह था नेकी का बुनियादी यानि सैद्धांतिक स्वरूप , अब इसका व्यवहारिक पक्ष मुलाहिज़ा फरमाएं।

नेकी का व्यवहारिक स्वरूप

पुण्य के व्यवहारिक स्वरूप के विषय में आता है :

وآتى المال على حبه ذوى القربى و اليتمى و المسكين و ابن السبيل و السائلين و فى الرقاب व आतल्–माल अला हुब्बिही ज़विल्–कुर्बा वल्–यतामा वल्–मसाकीन वब्नस्–सबीलि वस्–साअिलीन व फ़िर्रिक़ाबि 'नेकी या पण्य यह भी है कि मनुष्य अल्लाह के प्रेम हेतु ,अल्लाह के धर्म की सेवा में, देश और देशवासियों के समस्त वर्गों की सेवा में अपना धन निछावर कर दे , और सब के प्रति स्नेह और सद्भाव का प्रदर्शन करे।'

अन्यत्र फरमाया :

اجعلتم سقاية الحاج و عمارة المسجد الحرام كمن آمن بالله واليوم الآخر(١٩:٩)

अजअल्तुम सिक़ायतल्–हाज्जि व अिमारतल्–मस्जिदिल्–हरामि कमन् आमन बिल्लाहि वल्–यौमिल्–आख़िरि , यानि 'हाजियों को पानी पिलना तथा *काअबा* शरीफ़ की मस्जिद को आबाद करना -- यह धर्मपरायणता नहीं। तुम्हारे हाथ में अगर *काअबा* शरीफ़ की चाबियाँ आजाएं तो यह गर्व या अभिमान की बात नहीं। काअबा शरीफ का पुजारी होना, काअबा शरीफ़ का चाबी–धारक बन जाना या वहाँ दिये जलाना -- इसको धर्म की पावन संज्ञा नहीं दी जा सकती। धर्म का वास्तविक स्वरूप यह है कि (١٩:٩) آمن بالله واليوم الآخر وجاهد فى سبيل الله आमन बिल्लाहि वल्–यौमिल्–आख़िरि व जाहद फ़ी सबीलिल्–लाहि , अर्थात् 'परमात्मा की अपरंपार सत्ता पर , तथा *'आख़रत'* यानि अन्तिम दिवस पर विश्वास लाया जाए , और परमात्मा के मार्ग में धन और प्राणों तक की आहुति प्रस्तुत की जाए।'

परमात्मा के यहाँ सच्ची धर्मपरायणता ही मान्य है , आडंबर और रूढ़ियों का वहाँ

कोई महत्त्व नहीं

फरमाया : لن ينال الله لحومها و لا دماؤها ولكن يناله التقوى منكم (٣٧:٢٢) लंय्यनालल्–लाह लुहूमुहा व ला दिमाअुहा व लाकिंय्यनालुहुत्–तक्वा मिन्कुम , यानि 'यह जो तुम अल्लाह केलिए जानवरों की कुर्बानी देते हो , और इस में भी अपनी बड़ाई का प्रदर्शन करते हो , सुन लो कि परमात्मा के पास तुम्हारी कुर्बानियों का न तो माँस ही पहुँचता और न उनका रक्त। हाँ ! उस के पास तुम्हारी धर्मपरायणता और तुम्हारे पुण्यकर्म ही पहुँचते हैं। परमात्मा तुम्हारे बाहर को नहीं तुम्हारे भीतर को दखता है। वह मनुष्य की आंतरिक भावनाओं का ही ग्राहक है। जानवरों की बलि भी दो , लेकिन जब तम्हारे अपने बलिदान की ज़रूरत हो तो निस्संकोच अल्लाह के मार्ग में अपने प्राणों की आहुति पेश कर दो। धर्म का मूल उद्देश्य हृदय का शोधन है , यदि यह लक्ष्य प्राप्त न हुआ तो नमाज़–रोज़ा सब बेकार हैं।'

इसी भाव को अन्यत्र यों अभिव्यक्त किया है :

(١٠٧:٥–٤) فويل للمصلين الذين هم عن صلاتهم ساهون फ़वैलुल्–लिल्मुसल्ली–नल्–लज़ीन हुम अन सलातिहिम साहून , यानि 'उन नमाज़ियों का सर्वनाश ! जो '*रुकूअ*'(= झुकना) और सजदा तो करते हैं लेकिन नमाज़ के असल उद्देश्य को दृष्टिगत नहीं रखते।'

इन आयतों का अभिप्राय यही है कि एक ऐसे सुकुशल समाज का सूत्रपात हो जो सर्वांग यथार्थवादी हो। हज़रत पैग़म्बरश्री[सल्ल] ने एक ऐसे ही आदर्श समाज का सूत्रपात किया था । आप का कथन है : ان الله لا ينظر الى جلودكم و لا كن الله ينظر الى نياتكم (حديث) यानि 'परमात्मा को लोगों के रंगरूप या आकार–प्रकार से कोई वास्ता नहीं उसका संबध लोगों के मनोभावों और सुकर्मों से है। इसी लिए वह तुम्हारे चहरों को नहीं बल्कि तुम्हारे दिलों और तुम्हारी नीयतों को देखता है।'

प्रभु-प्रेम का व्यवहारिक सबूत

फरमाया :

وَاٰتَی الۡمَالَ عَلٰی حُبِّہٖ ذَوِی الۡقُرۡبٰی وَ الۡیَتٰمٰی وَ الۡمَسٰکِیۡنَ وَ ابۡنَ السَّبِیۡلِ وَ السَّآئِلِیۡنَ وَ فِی الرِّقَابِ व आतल्-माल अला हुब्बिही ज़विल्-कुर्बा वल्-यतामा वल्-मसाकीन वब्नस्-सबीलि वस्-साअिलीन व फ़िर्रिक़ाबि , यानि 'परमात्मा के प्रति अपने प्रेम का सबूत देते हुए अपने धर्म , समाज ,और देश की सेवा के लिए , अपने निकट संबंधियों के लिए ,निर्धनों के लिए, मुसाफिरों के लिए और माँगने वालों के लिए अपना धन व्यय करना ही सच्चा पुण्यकर्म और वास्तविक धर्म है। अभावग्रस्तों और मोहताजों की ज़रूरतों को पूरा करना , कर्ज़ में फंसे लोगों को उनके कर्ज़ से मुक्ति दिलाना , दासता की ज़न्जीरों में झकड़े हुओं को आज़ादी दिलाना -- यही पण्यकर्म और धर्मपरायणता है , ऐसे ही पुण्यवानों को परमात्मा प्रिय रखते हैं।' وَ اَقَامَ الصَّلٰوۃَ व अक़ामस्-सलात, 'और नमाज़ क़ायम करो यानि परमात्मा की उपासना करो , क्योंकि इस से मनुष्य का आंतरिक शोधन होता है। وَ اٰتَی الزَّکٰوۃَ व आतज़्-ज़कात , 'और अपने राष्ट्र को समृद्ध और प्रतिष्ठित बनाने केलिए अपना धन व्यय करो , *'ज़कात'* यानि नियमित दान दो। सुखद सामाजिक जीवन व्यतीत करने के लिए ज़रूरी है कि धनवान लोग स्वेच्छा से अपना धन ग़रीबों के उत्थान एवं जनकल्याण हेतु खर्च करें।'

वचन का पालन

और फरमाया : وَ الۡمُوۡفُوۡنَ بِعَہۡدِہِمۡ اِذَا عٰہَدُوۡا वल्-मूफून बिअहदि-हिम इज़ा आहदू ,'अपने रोज़मराह के लेनदेन आदि में वचन का पूरा पूरा ध्यान रखा करो , इस से तुम्हारी इज़्ज़त बढ़ जाए गी। वचन देकर मुकर जाना या बहाने बनाना अच्छी बात नहीं। वादा निभाओ। जुमा की

नमाज़ भी एक वादा है, पवित्र कलमा لا اله الا الله محمد رسول الله *ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह* (अल्लाह के सिवा और कोई ईश्वर नहीं , हज़रत मुहम्मदसल्ल॰ उस के रसूल हैं) भी एक वचन है। इसी प्रकार हम ने अपने गुरू युगसुधारक हज़रत मिर्ज़ा साहिबरज़॰[1] को भी एक वचन दिया है , अगर हम इन वचनों की पाबंदी नहीं करते तो सब व्यर्थ है।

संकट के समय धैर्य यानि सुदृढ़ता

والصبرين فى الباساء والضراء वस–साबिरीन फ़ल्–बासाअि वल्–ज़र्रआअि यानि 'बीमारी , तंगी , मुसीबत और संकट के समय धैर्य प्रदर्शित किया जाए' । यह एक महा कार्य है । विपदा बड़ी कष्टदायक चीज़ है। किसी के पिता का देहांत हो जाता है , किसी की माँ , पत्नी या बहन मर जाती है , किसी का भाई या पति मर जाता है। ऐसे परिक्षा–काल में धैर्य दिखाना और मनोबल बनाए रखना बड़ा ही कठिन काम है। कुर्आन शरीफ सवत्र मुसलमानों को *'सब्र'*(=धैर्य) का ही आदेश देता है ,हदीस में भी इस बात पर पिशेष बल मिलता है कि तकलीफ , कष्ट और दुख की कठिन घड़ों में धीरज धरा जाए।

हज़रत पैग़म्बरश्रीसल्ल॰ की सुपुत्री का बेटा बीमार था , उसकी हालत चिन्ताजनक हो गई । हज़रत पैग़म्बरश्रीसल्ल॰ पधारे और बेटी को दिलासा देते हुए फरमाया : ولتصبر واتحتسب यानि 'बेटी! सब्र से काम लो और अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करो', ان الله ما اخذ 'परमात्मा की चीज़ थी जो उस ने वापस ले ली' , ان الله ما اعطى 'और जो कुछ उस ने दे रखा है वो भी उसी की अमानत है'।

सुहाबा[2] का धैर्य

हज़रत पैग़म्बरश्रीसल्ल॰ ने एक ऐसे अपूर्व समाज की स्थापना की जिस का परमात्मा की अपरंपार सत्ता पर अगाध विश्वास था

1. आदर सूचक वाक्य *' रज़ियल्लाहु अन्हु '* (यानि अल्लाह उस से राज़ी हो) का संक्षिप्त रूप। (अनुवादक)
2. हज़रत पैगम्बरश्रीसल्ल॰ के सहवर्ती अनुयायी। (अनुवादक)

यह समाज विपदा और संकट के समय भी पभु की प्रसन्नता का ही अभिलाषी था । अर्थात् सुद्दढ़ रहते हुए धैर्य का प्रदर्शन करता था । स्त्री और पुरुष -- दोनों के व्यवहार से सुदृढ़ता और धैर्य भाव परिलक्षित होता था । अबू तलहा[रज़.] एक बहुत बड़े व्यक्ति थे , एक बार वो सफर में थे। उन की अनुपस्थिति में उन का बेटा सख्त बीमार हो गया। जिस दिन वो यात्रा से वापस घर पहुँचे , उस से कुछ ही समय पहले उनके बेटे की मृत्यु हो गई थी । उन की पत्नी ने सोचा कि वो सफर से अभी अभी लौटे हैं , बेटे की मृत्यु का दुखद समाचार सुनकर दुखी हो जाएं गे , उनको सदमा पहुँचे गा। अबू तलहा[रज़.] ने पूछा : बेटे का क्या हाल है? कहा : सो रहा है। *अल्लाहु अक्बर!*[1] क्या धैर्य , क्या साहस है! एक माता का अपने पुत्र की मौत पर कितनी उच्च कोटि का धैर्य ! सुबह हुई तो अपने पति से कहा : मैं आप से एक धर्मप्रश्न पूछती हूँ , अगर पड़ोसी से कोई वस्तु माँग कर ली जाए और वह उसे लेले , तो क्या उस वस्तु को वापस लौटाने में आपति होनी चाहिए? पति बोला : कदापि नहीं , जिस से कोई चीज़ ली जाए उसे वो चीज़ वापस लौटाना ही चाहिए । पत्नी ने कहा : तो सुनो , हमारा बेटा जो हमारे पास परमात्मा की अमानत थी वो उस ने वापस ले लिया। *सुब्हान अल्लाह!*[2] *सब्हान अल्लाह!* एक औरत एक मर्द को कैसा शानदार धर्मोपदेश देती है! यह है धर्मपरायणता का वह अद्‌भुत रंग जिस से हज़रत पैग़म्बरश्री[सल्ल.] ने सारे मुस्लिम समाज को रंग दिया। एक व्यक्ति का बाप ,भाई , बहन , माता , पत्नी मर जाते हैं , वो भी जब नमाज़ में खड़ा होता है तो यही वाक्य दोहराता है : الحمد لله ربّ العالمين *अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन* , सारी प्रशंसा , संपूर्ण स्तुति अल्लाह के लिए है जो समस्त लोकों का एकमात्र पालनहार-स्रेष्टा है। इस तरह कुर्आन शरीफ की पहली

1. प्रशंसा सूचक वाक्य, इसका भावार्थ है 'अल्लाह ही सब से महान है जिस ने अपने बन्दों को ऐसा महान कार्य करने की तौफ़ीक़ प्रदान की !' (अनुवादक)

2. प्रशंसा सूचक वाक्य, इसका भावार्थ है 'अल्लाह समस्त दोषों एवं त्रुटियों से पाक है वही अपने सच्चे भक्तों के अचार विचार को पवित्रता प्रदान करता है !' (अनुवादक)

ही आयत में संपूर्ण मुस्लिम जगत् को अपने प्रभु की इच्छा के प्रति धैर्यपूर्वक संतुष्ट रहने की अपूर्व सीख है। दुख-दर्द की घड़ियाँ आती हैं और चली जाती हैं , किन्तु ये घड़ियां भक्त के लिए कड़ी परिक्षा की घड़ियां होती हैं।

मुसलमानों का युद्धकालीन व्यवहार

फरमाया : والصبرين فى الباساء و الضراء و حين الباس वस्-साबिरीन फ़ल्-बासाअि वल्-ज़र्रआअि व हीनल्-बासि , यानि 'संकट आता है , दुख आता है , इसी तरह कभी कभी युद्ध का कष्टदायक समय भी आता है। युद्ध में माँ , बहन ,पत्नी , भाई , पिता और बेटा सब काम आ जाते हैं। युद्ध काल में मनुष्य के धैर्य का कठिन इम्तहान होता है। हज़रत अबू बक्र[रज़] से उन के पुत्र ने कहा : पिता जी! हम ने इस्लाम ग्रहण करने से पहले एक युद्ध के दौरान आप का वध सिर्फ इस लिए न किया कि आप हमारे पिताश्री हैं। हज़रत अबू बक्र[रज़] ने उत्तर दिया : बेटे ! अल्लाह की कसम , अगर उस समय तुम नज़र आ जाते तो सब से पहले मैं तोरा ही सिर उड़ा देता । युद्ध के दौरान पीठ दिखा कर भाग जाना यह मुसलमान की शान न समझी जाती थी। मुसलमान सीने पर गोलियां खाता था। मुसलमान को धर्म और राष्ट्र के संरक्षण के लिए सीने पर ही गोली खाना चाहिए , कायरों की तरह पीठ पर नहीं। स्वयं को बलिदान कर धर्म और राष्ट्र को जीवित रखना चाहिये।

धर्म और सत्यवादिता

फरमाया : اولئك الذين صدقوا ऊलाअिकल्-लज़ीन सदकू , 'यही वो लोग हैं जो अपनी धार्मिक मान्यताओं को अपने आचरण द्वारा चरितार्थ कर दिखाते हैं। ये लोग अपने कथन और व्यवहार में सत्यपरायण होते हैं। इन के आचार-विचार से यही सिद्ध होता है

कि ये सच्चे एकेश्वरवादी हैं। اولٰئك هم المتقون व ऊलाअिक हुमुल्–मुत्तकून यानि इन्ही लोगों को *मुत्तक़्क़ी* अर्थात् धर्मपरायण एवं कर्तव्यनिष्ठ कहा जाता है।

(उर्दू साप्ताहिक *'पैग़ामे सुलह'* , लाहौर ,12 दिसम्बर 1962)

हिन्दी के कुछ अन्य प्रमुख प्रकाशन

सूरः अल्–फ़ातिहा (सटीक हिन्दी अनुवाद)
मूल उर्दू लेखन,हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन

हदीस सार यानि अनुसरणीय हदीसें
मूल अंग्रेज़ी लेखन,हज़रत मौलाना मुहम्मद अली लाहौरी

इस्लाम और अनय धर्म अर्थात् धर्म का दार्शनिक स्वरूप,
मूल उर्दू लेखन,हज़रत मौलाना मुहम्मद अली लाहौरी

शांति सन्देश,
मूल उर्दू लेखन,हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब

नमाज़ और सफलता के तीन मार्ग,
मूल उर्दू लेखन,हज़रत मौलाना मुहम्मद अली लाहौरी

हज़रत मुहम्मद––वर्तमान ययुग के जगद्व्यापी पैग़म्बर,
मूल उर्दू लेखन,हज़रत मौलाना सदरुद्दीन

इस्लाम –– एक परिचय (इस्लाम संबंधी 100 बुनियादी प्रश्नोत्तर)
मूल अंग्रेज़ी लेखन,डॉ.ज़ाहिद अज़ीज़(संपादक "The Light")